भैयाजी दाणी सेवा न्यास के तत्वावधान में 23 से 25 जनवरी 2017 तक उज्जैन में आयोजित सेवा संगम, मालवा के उद्घाटन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. आज सेवा संगम, मालवा के इस मंच पर आकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। सेवा के माध्यम से समाज में दुःखी, पीड़ित एवं वंचित वर्ग को विकास की मुख्य धारा में लाने के लिए हो रहे प्रयत्नों की श्रृंखला में इस संस्था द्वारा किए जा रहे प्रयास अत्यन्त उल्लेखनीय हैं।

2. शास्त्रों में कहा गया है कि ''सेवा परमो धर्मः'' अर्थात् सेवा ही परम धर्म है। नर सेवा ही नारायण सेवा है। यह सिद्धान्त हमारे समाज में बहुत सी संस्थाओं को प्रेरणा देता है। इसी कड़ी में इस संस्था द्वारा ऐसी सेवा गतिविधियों को संचालित किया जा रहा है। ऐसे समाजसेवी प्रबुद्धजन अपने अनुभव, समस्याओं और उपलब्धियों को साझाकर अपने सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह से और अधिक लोगों की सेवा कर उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकेंगे एवं सशक्त भारत के निर्माण में अपना योगदान दे सकेंगे।

3. महाकालेश्वर की इस पुण्यनगरी में इस आयोजन में आप सबके साथ विचार–विनिमय एवं सामूहिक चर्चा कर हम सभी लाभान्वित होंगे। पुण्यसलिला शिप्रा नदी का तट हमें सदैव सेवा कार्यों के लिए प्रेरित करता है। यहां आध्यात्मिकता, दर्शन, धर्म, कर्म और सेवा का समागम है। तभी तो सम्पूर्ण मानवता के लिए यह एक विशेष स्थल बन गया है।

4. भैयाजी दाणी सेवा न्यास, इन्दौर वर्ष 1989 से ही समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्तियों को विकास की मुख्य धारा में लाने के लिए प्रयत्नशील है। संघ की प्रेरणा से वनवासी एवं शहरी झुग्गी बस्तियों को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर पूरे भारतवर्ष में लगभग डेढ़ लाख सेवा कार्य संचालित किए जा रहे हैं।

5. सर्वप्रथम वर्ष 2011 में आयोजित प्रथम सेवा संगम में 59 संस्थानों के प्रतिनिधियों एवं 125 व्यक्तिगत सेवाकार्य करने वाले व्यक्तियों ने हिस्सा लिया था। इस द्वितीय सेवा संगम में लगभग 300 सेवा संस्थानों एवं 200 व्यक्तिगत सेवा करने वाले व्यक्ति शामिल हो रहे हैं। मैं उन सभी को साधुवाद देती हूं जिन्होंने समाज के प्रति अपने दायित्वों का बखूबी निर्वहन किया है।

6. परमात्मा तक पहुंचने के कई मार्ग होते हैं। उनमें से एक मार्ग सेवा भाव का भी है। मुझे खुशी है कि हमारे देश में तत्वज्ञानियों की कमी नहीं है। वे बुद्धियोग, कर्मयोग एवं मनोयोग से परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग जानते हैं। सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में परमात्मा ही विराजमान है। अतः उनकी सेवा ईश्वर की ही सेवा है। अतः सेवा मार्ग भी भक्ति मार्ग है, धर्म मार्ग है। यह आत्मोत्थान का मार्ग है। यह अत्यन्त गूढ़ रहस्य है। इसे जानने वाले आत्मीयजनों के समक्ष उपस्थित होकर मैं धन्य हूं।

7. संस्कृत के एक श्लोक में कहा गया है जिसे मैं उद्धृत करना चाहती हूंः–

''यस्तु संचरते देशान् सेवते यस्तु पण्डितान्।
तस्य विस्तारिता बुद्धिस्तैलबिन्दुरिवाम्भसि ।।''

अर्थात्, वह व्यक्ति जो विभिन्न देशों में घूमता है और विद्वानों की सेवा करता है, उस व्यक्ति की बुद्धि का विस्तार उसी तरह होता है, जैसे तेल की बूंद पानी में गिरने के बाद फैल जाती है।

8. भैयाजी दानी सेवा ट्रस्ट जिसका मार्गदर्शी सिद्धांत ''सेवा हि परमो धर्म '' है और जो ''समरस समाज'' अर्थात् एक ऐसे समाज जिसमें समरसता हो, का निर्माण करने के सेवा भारती के सिद्धांत का पालन करता है, ने मालवा क्षेत्र के लोगों के जीवन को काफी बेहतर बनाया है । यह ट्रस्ट भारतमाता के सपूत भैयाजी दानी जो पूरी मानव जाति के कल्याण के लिए अथक कार्य करने में विश्वास रखते थे, के सपनों को साकार कर रहा है।

9. मैं अपनी प्रिय प्रार्थना के साथ अपना भाषण समाप्त करूंगीः–

सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु। सर्वेषां शान्तिर्भवतु।
सर्वेषां पूर्णंभवतु। सर्वेषां मंगलंभवतु।
शान्तिः शान्तिः शान्ति ।

अर्थात् सबका कल्याण हो; सर्वत्र शांति हो; सबकी इच्छाएं पूरी हों; सबका मंगल हो।

धन्यवाद।